वैशेषिक दर्शन में पदार्थ के रूप में द्रव्य विचार

शिशु की ये अनुभूतियाँ सिद्ध करती है कि इस जीवन के पूर्व भी उसका अस्तित्व था। इससे आत्मा की सत्ता प्रमाणित होती है।

(ii) **परमात्मा** :- परमात्मा को ही ईश्वर कहा जाता है। ईश्वर भी एक प्रकार की आत्मा ही है। इसका प्रधान गुण चेतना है। इस प्रकार, चेतना इसका आवश्यक गुण है। ईश्वर को शरीर धारण नहीं करना पड़ता है। उसमें भी इच्छा, संकल्प आदि रहते हैं किन्तु असीम एवं पूर्ण रूप में। परमात्मा के विषय में सुख : दुःख, हर्ष विषाद, पाप-पुण्य का प्रश्न नहीं उठता है। ईश्वर नित्य, एवं पूर्ण है। वह संसार का रचयिता, पालन-पोषण-कर्ता एवं संहर्ता है। उसे सर्वशक्तिशाली, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी शुभ आदि कहा गया है।

वैशेषिक परमात्मा (ईश्वर) को भी सिद्ध करने के लिए प्रमाण देते हैं -

(1) जब प्रत्येक घटना का एक कारण होता है तो विश्वरूपी कार्य या घटना के कारण के रूप में ईश्वर (परमात्मा) को मानना आवश्यक है।

(2) अचेतन अदृष्ट के संचालनकर्ता के रूप में ईश्वर को मानना आवश्यक है।

(3) श्रुति, स्मृति आदि प्रमाणिक ग्रन्थों के आधार पर भी परमात्मा अर्थात ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है।

वैशेषिक के द्रव्य विचार को जान लेने के बाद हम यह पाते हैं कि वैशेषिक के द्रव्यों का वर्गीकरण भौतिकवादी नहीं है क्योंकि वह भौतिक द्रव्यों के अतिरिक्त आत्मा की सत्ता में विश्वास करता है। इनका द्रव्यों का वर्गीकरण आध्यात्मवादी भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि वह भौतिक द्रव्यों की सत्ता स्वीकार करता है। इनका द्रव्य

विचार वस्तुवादी है। वस्तुवाद उस दार्शनिक सिद्धान्त को कहा जाता है जो वस्तुओं का अस्तित्व सत्ता से स्वतन्त्र मानता है। वैशेषिक भी द्रव्यों की सत्ता को सत्ता से स्वतन्त्र मानता है। अतः वैशेषिक का द्रव्यों का वर्गीकरण वस्तुवादी है। वैशेषिक का द्रव्य विचार अनेकवाद का समर्थन करता है। यह द्रव्यों की संख्या अनेक मानता है। यह द्रव्यों के नौ प्रकार बतलाता है। अतः वैशेषिक के द्रव्य का वर्गीकरण अनेकवादी कहा जाता है।